http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 10, 27-29

Article ID:483

टमाटर की मुख्य बीमारियाँ और उनके रोकधाम

पंकज कुमार[1], विनोद कुमार[1], गौरव सिंह[1], विजय[1], ऐनी खन्ना[2] व नवीन[1]

[1]महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल
[2]भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

*अनुरूपी लेखक
पंकज कुमार*

टमाटर हमारे रसोई घर की ज़रूरत है। सब्ज़ी, दाल, चटनी या सलाद– हर जगह इसका इस्तेमाल होता है। यह स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी फायदेमंद है। इसमें विटामिन A, C और कई तरह के लवण होते हैं जो शरीर को ताकत देते हैं। लेकिन टमाटर की फसल पर कई तरह की बीमारियाँ आ जाती हैं। अगर समय रहते उनका इलाज न किया जाए तो पैदावार कम हो जाती है। किसान भाइयों को चाहिए कि फसल पर नज़र रखें और बीमारी दिखते ही तुरंत उपाय करें। नीचे टमाटर की कुछ कुछ मुख्य बीमारियाँ और उनके आसान समाधान बताए जा रहे हैं–

1. आर्द्रगलन रोग (नर्सरी में पौधे गिरना)

यह बीमारी पौधशाला (नर्सरी) में ज्यादा आती है। बीज अंकुरित होने से पहले या बाद में छोटे-छोटे पौधे गिरकर सूख जाते हैं।

रोकथाम

1. बीज बोने से पहले कैप्टान या थाइरम दवा @ 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचार करें।
2. पौधे उगने के बाद, 2 ग्राम कैप्टान एक लीटर पानी में मिलाकर नर्सरी में छिड़काव करें।

टमाटर का आर्द्रगलन रोग

2. पत्ती मरोड़ रोग (पत्ते मुड़ना और फल छोटे होना)

इस रोग में पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पत्तियाँ मोटी, मुड़ी और बदरंग हो जाती हैं। तनों पर धारियाँ आ जाती हैं और फल छोटे तथा खराब दिखते हैं। यह बीमारी एक कीट (सफेद मक्खी) के ज़रिए फैलती है।

रोकथाम

1. केवल अच्छे और स्वस्थ बीज ही बोएं।
2. बीमार पौधों को तुरंत उखाड़कर खेत से बाहर कर दें।
3. सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए मेलाथियान 50 ईसी @ 400 मि.ली. को 250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करें।

3. अगेती झुलसा रोग (पत्तों और फलों पर धब्बे)

इस रोग में पत्तों पर गोल या तिकोने भूरे-काले धब्बे बन जाते हैं। तनों पर भी दाग पड़ते हैं और फलों पर धब्बे ज़्यादातर डंठल के पास दिखाई देते हैं।

रोकथाम

1. नर्सरी में ज़्यादा पानी न दें।
2. खेत में अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद डालें।
3. बीज को बोने से पहले कैप्टान या थाइरम @ 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचार करें।
4. फसल पर जिनेब या मैनकोज़ेब दवा @ 400 ग्राम प्रति एकड़, 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। यह छिड़काव हर 10-15 दिन बाद दोहराएँ।

टमाटर फसल में अगेती झुलसा रोग का प्रकोप

किसान भाइयों के लिए खास सलाह

- ✓ बीज हमेशा भरोसेमंद स्रोत से ही लें।
- ✓ पौधशाला और खेत को साफ-सुथरा रखें।
- ✓ कीटों और बीमारियों पर शुरुआत से ही नज़र रखें।
- ✓ दवाइयों का छिड़काव हमेशा सुबह या शाम के समय करें।
- ✓ दवा का छिड़काव करते समय हाथ-मुँह ढकें और सावधानी बरतें।